

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 10
02 फरवरी, 2022 को उत्तर के लिए

इस्पात क्षेत्र से उत्सर्जित कार्बन

10. श्री सी.पी. जोशी:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या विगत पाँच वर्षों के दौरान इस्पात क्षेत्र से उत्सर्जित कार्बन की मात्रा का ब्यौरा क्या है;
- (ख) क्या सरकार ने इस्पात क्षेत्र को कार्बन उत्सर्जन से मुक्त करने के लिए कोई लक्ष्य निर्धारित किया है और यदि हाँ, तो इस्पात क्षेत्र में कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए जा रहे हैं; और
- (ग) क्या सरकार इस्पात के उत्पादन के लिए नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने पर काम कर रही है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

इस्पात मंत्री

(श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह)

(क) विगत वर्षों में भारतीय इस्पात उद्योग ने आधुनिकीकरण एवं विस्तार परियोजनाओं में श्रेष्ठ उपलब्ध प्रौद्योगिकियों के व्यापक उपयोग के माध्यम से अपनी ऊर्जा खपत तथा कार्बन उत्सर्जन को पर्याप्त रूप से कम किया है। भारतीय इस्पात उद्योग की औसत सीओ₂ उत्सर्जन गहनता वर्ष 2005 में लगभग 3.1 टन/टन क्रूड इस्पात (टी/टीसीएस) से 2020 तक घटकर लगभग 2.6 टी/टीसीएस हो गई है।

(ख) जलवायु परिवर्तन के विपरीत प्रभावों को कम करने तथा इनके साथ सामंजस्य बिठाने के लिए भारत ने जलवायु परिवर्तन हेतु राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) के अंतर्गत विभिन्न उपाय किए हैं। बढ़ी ऊर्जा दक्षता के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमईईई), एनएपीसीसी के अंतर्गत 8 मिशन में से एक है।

द परफॉर्म एचीव एंड ट्रेड (पीएटी) एनएमईईई के अंतर्गत एक प्रमुख योजना है। यह ऊर्जा दक्षता बढ़ाने के लिए एक बाजार आधारित प्रणाली है, जिसके अंतर्गत ऊर्जा बचत के विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। जो इन निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें ऊर्जा दक्षता प्रमाण पत्र (ईएस सर्टिफिकेट) प्रदान किए जाते हैं, जिनमें प्रत्येक ईएससी 1 मीट्रिक टन तेल के बराबर होता है। जो अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल रहते हैं, उनके द्वारा एक केन्द्रीयकृत ऑनलाइन ट्रेडिंग प्रणाली के माध्यम से अधिक सफलता प्राप्त करने वाली इकाइयों से ईएससी प्रमाण पत्रों की खरीद अपेक्षित है। भारतीय इस्पात उद्योग पीएटी योजना के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण हितधारक है। इस्पात क्षेत्र वर्ष 2012-20 की अवधि के लिए पीएटी चक्रों पीएटी-I पीएटी-II और पीएटी-III के लिए कुल लक्षित ऊर्जा बचत को प्राप्त करने में समर्थ रहा है, जो 5.5 एमटीओई (मिलियन टन तेल के समतुल्य) है और इसके समतुल्य कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में 20 मिलियन टन की कमी हुई है।

(ग) इस्पात क्षेत्र में आधुनिकीकरण एवं विस्तार परियोजनाओं में वैश्विक स्तर पर उपलब्ध श्रेष्ठ उपलब्ध प्रौद्योगिकियों को अपनाया है।

इसके अतिरिक्त, इस्पात क्षेत्र को लौह एवं इस्पात निर्माण प्रक्रिया में हरित हाइड्रोजन के प्रयोग को सुकर बनाने के लिए राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन में एक महत्वपूर्ण हितधारक बनाया गया है। इस पहल के अंतर्गत डायरेक्ट रिड्यूस्ड आयरन (डीआरआई) उत्पादन में ग्रीन हाइड्रोजन के प्रयोग की व्यवहार्यता की संभावना तलाशने के लिए सार्वजनिक एवं निजी भागीदारी के अंतर्गत दो प्रायोगिक संयंत्रों की स्थापना करने का प्रस्ताव किया गया है।
